प्रातःक्लास 20-4-68 ओमशान्ति अल्फ और बे याद है?

****

ओमशान्ति। बच्चों की बुधि में है कि हम रूहानी युनिवर्सिटी में बैठे हुये हैं। यहनशा होना चाहिए। आर्डीनरी रीति जैसे स्कूल में बैठते हैं बुधू होकर नहीं बैठना है। बहुत बच्चे जैसे बुधू होकर बैठते हैं। याद रहना चाहिए यह ऊंच ते ऊंच परमपिता परमात्मा की युनिवर्सिटी है। इसके हम स्टुडन्ट है। वह फलक खुनकी होनी चाहिए। यह है बुप्त खुशी, गुप्त ज्ञान। हर एक बात गुप्त है। कईयों को यहां बैठे भी बाहर की गंदी खयाल आती रहती है। यहां तुम पढ़ते ही हो भविष्य नई दुनिया का वर्सा पाने लिए। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। देवी गुण भी होनी चाहिए। भल यहां सभी ब्राहमण ही आते हैं। वहां के किचड़पटी से तुम निकल कर आते हो। जैसेकिकिचड़े से निकल कर आते हो। किचड़े का टब होता है ना। यह पुरानी दुनिया किचड़े का एक बड़ा टब है। उन से तुम निकल आये हो। तो कितनी खुशी रहनी चाहिए। सारी दुनिया गन्द में पड़ी है ना। कहां यह कलियुगी गन्द कहां सतयुगी फुलवारी। कलियुग में एक दो कांटे ही लगाते गन्द ही करते रहते हैं। तुमको तो अभी फूल बनना है। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। हम अभी फूल बनते हैं। यह बगीचा भी है। बाप को बागवान कहा जाता है ना। कांटों को फूल बनाते हैं। यह तोसमझ होनी चाहिए कि हम किस प्रकार के फूल बन रहे हैं। यहांबगीचा भी तो है। मुरलीसुन कर फिर बगीचे में जाकरफूलों से अपनी भेंट करो हम कौन सा फूल है। हम काआ तो नहीं हैं। जो लड़ते-झगड़ते हैं वह अपने को कांटा समझो। हमफूल बनने लायक नहीं हैं। 100% नालायक है। जिस समय क्रोध होता हैतो समझना चाहिए मैं कांटा हूं। मेरे में भूत है। इतनी नफरत आनी चाहिए। क्रोध झट आ जाता है। सभी के बीच में। काम तो सभी के बीच हो न सके। वह तो छिपा कर करते हैं। क्रोध तो बाहर में निकल पड़ता है। क्रोध करते हैं तो उसका भी असर सारादिलअन्दर में चलता है। यह क्रोध के कांटा हैं। लोभी कांटा है। अपने से आये ही नफ्तर आनी चाहिए। परन्तु आती नहीं है।

तुम बच्चे समझते हो हमको बाप फूल बनाते हैं। किसको गन्द में देखते हैं तो समझते हैं यह क्या। हम आये हैं गन्द से निकालने यह फिर भी गन्द में पड़े रहते हैं। काम और क्रोध तो बहुत गन्दी है। सारी शोभा ही गवांये देते हैं। यहां शोभा दिखावेंगे तब वहां भी शोभा पावेंगे। कितनारोज समझाते रहते हैं। बच्चों देवीगुण धारण करो। स्वर्ग में चलना है ना। यह (ल०ना०) कितने गुणवानहैं? महिमा भी इनकी गाते हैं हम नीच पापी कामी है, आप सर्व गुण सम्पन्न हैं। हम गटर में पड़े रहते हैं। अभी बाप गटर से निकालने आये हैं तो उस से निकलना चाहिए ना। न कि पड़ारहनाचाहिए। भाषण में भी तुम ऐसे2 समझा सकते हो। स्वर्ग है फूलों का बगीचा। नर्क है कांटों का जंगल। वेश्यालय। शिवालय और वेश्यालय तोस्वयुरेट है। शिव बाबा स्वर्ग स्थापन करते हैं, रावण नर्क स्थापन करती हैं। देखना चाहिए हमको गन्दा ख्यालात बुधि में आता है तो नफ्रत आनी चाहिए। हम आत्मा बाप के बच्चे हैं हमारे में गन्द कहां से आई। अगर गन्द होगातो बाप का नाम बदनाम करेंगे। क्रोध करेंगे तो बाप की निन्दा कराई ना। क्रोध का भूत आया हो बाप को भूल जाते हैं। बाप की याद हो तो कोई भी भूत आवे ही नहीं। बहतों के दिलों को रिझाते हैं। असर पड़ जाता है। एक बार क्रोध किया वह तो मासबुधि में रहताहै कि यह क्रोधी है। फिर दिल से उतर जाते हैं। गन्दी आदत है ना। बापदादा के दिल से उतर जाते हैं। यह दादा भी कोई कम नहीं है। विश्व का मालिक बनते हैं तो इन में भी जरूर खुबियां होंगी ना। परन्तु कोई के तकदीर में न है तो तो तदबीर करते ही नहीं। कितनी सहज तदबीर है। सिर्फ बाप कहते हैं बाप को याद करो तो आत्मा स्वच्छ बन जावेंगी। और कोई उपाय नहीं हैं। इन महाऋषियों आदि में आदि में कितने फंसे हुये हैं। राजऋषि तो कोई है नहीं। राजयोग सिखलाने वाला एक ही बाप है। मनुष्य मनुष्य को सुधार न सके। बाप आकरसभीको सुधार देते हैं। जो बिलकुल अच्छी तरह सुधर जाते हैं वही पहले2 आते हैं। तो गन्दी आदतों को निकाल सुधारना चाहिए ना। पढ़ाई पर योग पर ध्यान देना चाहिए। यह भी समझते हैं सभी नहीं ऊंच बनेंगे परन्तु बाप तोपुरुषार्थ करावेंगे ना। जितना होसके पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाओ। नहीं तो

कल्प-कल्पान्तर ठरकते रहेंगे। बाबा समझाते तो बहुत हैं। बाप को याद करना है तो कीचड़ा निकल जाये। वह सन्यासी आद तो हठयोग बैठसिखलाते हैं। वह तो कोई काम के नहीं। ऐसे मत समझना हठयोग से कोई तन्दरुस्ती अच्छी होती है। वह कब बिमार नहींपड़ते। नहीं। सभी बिमार पड़ते हैं। भारत में जब इनका राज्य था तो सभी की आयु भी बड़ी थी। हेल्दी वेल्दी थे। अभी तो बिलकुल छोटी आयु है। भारत को ऐसा किसने बनाया। यह कुछ नहीं जानते हैं। घोर-अंधियारे में हैं। तुम कितना भी समझाओ परन्तु उन्हों समझना बड़ा ही मुश्किल है। फिर भी साधारण गरीब ही समझने की कोशिश करते हैं। यहां कोई लखपति है क्या। नहीं। आजकल तो लख कोई बड़ी बात नहीं। एक लाख होगा उनको भी लखपति कहेंगे ना। लखपति तो ढेर हैं। उनको बाबा साधारण कहते हैं। आजकल तो करोड़पति की बात है। 40-50 करोड़ है तो शादियों आदपर कितना खर्चा करते हैं। तुम बच्चों को समझाना बड़ा युक्ति से है जो तीर लग जाये। बड़े2 आदमी एम०पी० आद आते हैं तो खुश बहुत होते हैं, लिखते हैं बाबा आज यह2 आये परन्तु एक में भी वह ताकत नहीं जो फिर आवाज़ कर सके। विश्व में शान्ति तो इन ब्रहमा कुमारियां बिना कोई कर नहीं सकता। दुनिया तो यह नहीं जानती है। भल तुम समझाते हो परन्तु पुरा समझते नहीं हैं। यथा योग पुरा समझ कर जाते नहीं हैं। ऊंच ते ऊंच है भगवान। ऊंच ते ऊंच है वर्सा। उन्हों को यह स्वर्ग का वर्सा किसने दिया।? यहकहां के रहवासी हैं। यह भी बहुतों को पता नहीं हैं। बिलकुल ही चट खाते में हैं। म्युज़ियम में आते तो बहुत हैं समझाने की चान्स भी अच्छा है। परन्तु योग है नहीं। बाप को याद करे तो प्रफुल्लता भी आये। हम किसके सन्तान हैं। कितने बच्चे कायदे सिर पढ़ते भी नहीं हैं। बाप से योग है नहीं। यहतो बाप भी कहते हैं परिपूर्ण तो कोई बना नहीं हैं। नम्बरवार हैं। बच्चों को एकान्त में बैठ कर बाप को याद करना है। [illegible] पाते हैं। इस दुनिया में हम ही सब से जास्ती पतित बने हैं। फिर हमको ही पावन बनना है। यह अच्छी [illegible] याद करना है। बाप ह० प्रकार की राय देते हैं* किऐसे ऐसे करो। जैसे क्वीन विक्टोरिया का वज़ीर कितना [illegible] था। बत्ती पर पढ़2 कर कितना ऊंच पद पा लिया। शौक था ना। यह भी धनियों के लिए है। बाप है [illegible] गरीब निवाज़। शाहुकारों को नशा बहुत रहता है। कब यह स्वपन्न में भी ख्याल न करना चाहिए कि यह [illegible] पैसों वालों को तो पैसे ही, बंगले, कारखाने आद ही याद आते रहेंगे। वह क्या भगवान को याद कर सकते [illegible] कहेंगे हमारे लिए तो स्वर्ग यहां ही है। और बाप ने तो स्वर्ग की स्थापना की ही नहीं है। अभी कर रहे [illegible] बाप को याद करो। पावन तो जरूर बनना ही है। बच्चों को युक्तियां रचनी है कैसे किसको समझावें। [illegible] भारत का योग सिवाय परमपिता परमात्मा के कोई सिखला न सके। हठयोग है ही निवृति मार्ग वालों के लिए। बाप समझाते रहते हैं जब किसको कल्याण होना होगा तो फिर लिखेंगे भी ऐसे। अभी देरी है तो किसकी बुद्धिमें आता ही नहीं है। तुम्हारी है ईश्वरीय मिशन। बाकी तो सभी लंगूर हैं। शिकल भल मनुष्य की है शिकल तो इन देवताओं की भी मनुष्य जैसी ही है ना। इन में और तुम्हारे में फर्क क्या है। 10भुजाएं आद थोड़े ही हैं। मनुष्य तो मनुष्य ही होते हैं। शास्त्रों में क्या2 बातें बैठ बनाई हैं। दिलपाला मु मंदिर की कितनी बड़ी कमिटी बनी हुई है परन्तु जरा भी अर्थ नहीं जानते। डास्टा-टारियां छोटे2 निकलते रहते हैं। अनेक प्रकार के मत निकलते हैं। जिसको जो आता कह देते। झाड़ का मिशाल भी कितना अच्छा है। नये2 पत्ते निकलते रहते हैं। तो उनका कितना शौक होता है। अन्धश्रधा कितनी है। रात-दिन का फर्क है। कोई तो कुछ भी नहीं जानते। सिर्फ अपने को आत्मा समझो। बाप को याद करो तो पाप कट जावेंगे। दैवी गुण धारण करो तो ऐसे बन जावेंगे। ढिंढोरा पिटवाते ही रहो। ढिंढोरामी किसम2 के होते हैं। वह अभिमान न हो तो ढोल भी गले में डाल दे और सभी बताते जावें कि बाप आया हुआ है कहते हैं मुझे याद करो तोतुम पतित से पावन बन जावेंगे। यही घर2 में संदेश देना है। सभी को कट चढ़ी हुई है। तमोप्रधान दुनिया है ना। ऐसे तुम

ढिंढोरा पीटेंगे तोफिर सभी आकर सुनेंगे। देह अभिमान न हो तो यह कर सकते हैं। सर्विस तो बहुत है। बाप का पैगाम पहूंचाना है। बाप सभी को मैसेन्ज देने आये हैं। पिछाड़ी में तुम्हारी वाह वाह निकलेगी। कहेंगे कमाल है इन्हों की। इतना जगाया तो भी जगे नहीं। जो जागे उन्हों ने तो पा लिया। जो सोये रहे तो खो लिया। बाप बादशाही देने आते हैं फिर खोये लेते हैं। सर्विस करने की युक्तियां रचनी चाहिए। निगम बच्चे ने छुट्टी ली है। नेपाल में जाकर सर्विस करे। जाकर ढिंढोरा पिटवाओ। बाप आया है, कहते हैं मामेकम याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बन जावेंगे। याद न करेंगे तो कटेंगे नहीं। कोई भी कट न रहे तब ऊंच पद पा सकते हैं। नहीं तो पद भी कम और सजाएं भी खावेंगे। सर्विस को अच्छी मार्जिन है। रेगजीन वाले चित्र तो बहुत अच्छे हैं। साथ में ले जाने से सर्विस कर सकते हैं। चित्र ऐसी अच्छी रीत बनानी चाहिए जो खराब न हो। यह चित्र बहुत अच्छी चीज़ है। बाकी माइल खिलौने आद जो बनाते हैं वह कोई काम के नहीं। यह तो जैसे छोटे बच्चों के खिलौने हैं। बड़े2 आदमियों के बड़े2 चित्र होते हैं। हजारों वर्ष चलती है। उनकी बड़ी वैलयु होती है। कपड़ा अच्छा होने से चित्र खराब नहीं हो सकते हैं। 6चित्र काफी हैं। बोलो यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है हम आप को समझाते हैं। इस चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे। वैज तो है ना। परन्तु इनकी वैल्यु बच्चों पास नहीं है। इन पर तुम समझाते रहो तो भी कमाई बहुत होगी। खुशी से लेवे भी तो समझे भी। यह तो छाती से लटका रहे। यह बाबा। इस ब्रहमा द्वारा यह वर्सा देते हैं। ट्रेन में भी चक्र लगाते यह समझाते रहो। छोटे बच्चे भी कर सकते हैं। कोई मना नहीं करेंगे। इस में खान-पान आद की तो कोई बात ही नहीं। यह वैज ऐसी चीज है जो हीरे जवाहर महल, फल फूल आद सभी कुछ इन में इगर्ज है। ऐसी यह स्टर्ट क्लास चीज़ है। परन्तु बच्चों की बुधि में नहीं आता है। बाबा ने तो बहुत ही बार समझाया है। चित्र साथ में जरूर हो। कोई उल्टा सुल्टा भी बोलेंगे। कृष्ण को भी गाली मिली थी ना। भगत हैयर करते हैं। उनको भी तोपलुरानी ही बनाते थे। विश्व के मालिक बन कर ऐसे कोई काम थोड़े होवेंगे। शास्त्रों में तो ऐसी2 बातें लिखी हुई है जो सभी शास्त्र समुद्र में फेंक दी जाये। बाबा को अभी राजाई मिले तो अभी हुकुम करें सभी शास्त्र समुद्र में डालो। परन्तु ड्रामा में है नहीं। ऐसी दिल होती है। बच्चों को भी लहर आनी चाहिए। हम तो चाहते हैं जल्दी विनाश हो जाये। फिर कहते हैं अभी तो बाबा साथ है। बाबा को छोड़ेंगे फिर तो 5000वर्ष बाद ही मिलेंगे। ऐसे बाबा को हम कैसे छोड़ें। बाबा से तो हम पढ़ते रहें। यह है ब्राहमणों का ऊंच ते ऊंच जन्म। परन्तु जिनका बाप से भी लव हो। ऐसा बाप जो हमको राजाई दे रहा है। फिर तो हम उन से मिलेंगे नहीं। परन्तु गंगा पर रहनेवालों को इतना कदर नहीं रहता है। किचड़ा आद डालते रहते हैं। बाहर वाले कितना महत्व रखते हैं। यहां भी बाहर वाले कुर्बान जाते हैं। योगबल न है तो कुछ भी समझते नहीं। आते भी बहुत हैं। लिखते भी हैं ऐसे2 समझाया। बहुत अच्छा समझा। बाबा समझाते हैं सुना है ऐसे जैसे सुना ही नहीं। जरा भी समझा नहीं। बाप को ही न जाना। अगर कुछ समझे तो ऐसे बाप सेकनेक्शन रखो। चिट्ठी लिखो। झट पूछे ऐसे बाप को तुम चिट्ठी कैसे लिखते हो। बतावेंगे शिव बाबा केअर आफ ब्रहमा। एकदम लिखने लग पड़े। यह तो रथ है इनकी क्या कीमत होगी। कीमत तो है उनकी। जो इसमें प्रवेश करते हैं। सर्विस करते हैं बहुत। समझाते2 गला हीथक जाता है। परन्तु योग नहीं तो तीर लगता नहीं। उसको भी ड्रामा कहेंगे। बाप को जान लिया तो फिर मिलने बिगड़ रह न सके। ट्रेन में भी योगयुक्त हो। हम जाते हैं बाबा के पास। जैसे विलायत से आते हैं तो स्त्री घर-बार याद आते हैं तुम किसके पास आते हो। रास्ते में भी कितनी खुशी होनी चाहिए। साधारण ही कुछ सर्विस करते हैं। जिनको घुंमड रहता है महारथी जिनको कहा जाता वह कम सर्विस करते हैं। बाप है सागर। देखते हैं बच्चे फालो कर रहे हैं ज्ञान की लहरें उठते-बैठते हैं तो देख कर खुश होते हैं। यह तो बहुत अच्छा सपूत बच्चा है। सबेरे की याद की यात्रा में बहुत फायदा है। याद तो उठते बैठते करना है। सर्विस की तो तुम याद की यात्रा पर हो। अच्छा ओम।